



ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 1

कुल पृष्ठ-8

13 से 19 सितम्बर, 2018

दयानन्दाब्द 194

सृष्टि सम्वत् 1960853119

सम्वत् 2075

आ.कृ.-11

**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40 वें स्थापना दिवस पर
‘राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन’ समारोह पूर्वक सम्पन्न**

**आर्य समाज की युवा शक्ति सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध करे कड़ा संघर्ष
- स्वामी आर्यवेश**

**महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर चलने की आवश्यकता
- सांसद डॉ. सुशील गुप्ता**

**समाज में नैतिकता की रक्षा के लिए समलैंगिकता को पुनः अपराध घोषित करे
- अनिल आर्य**

नई दिल्ली। रविवार, 9 सितम्बर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के 40 वें स्थापना दिवस पर योग निकेतन सभागार, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली में ‘राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन’ का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश के लगभग 14 प्रान्तों से 800 से अधिक आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी एवं प्रेरणादाई उद्बोधन में आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश आज कई

सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है और हमें यह कहते हुए गर्व है कि बलिदान, वीरता, संकल्पशीलता, परिश्रम, लगन एवं त्याग की परम्परा का गौरवशाली इतिहास हमारे पीछे है। आर्य समाज ने हर संकट में आगे बढ़कर कार्य किया है। आज पुनः आवश्यकता इस बात की है कि हम लोग समाज के शोषित, पीड़ित पिछड़े लोगों के दुःख दर्द में उनके साथी बनें, उनका सहयोग करें। उन्होंने कहा कि ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की उदात्त भावना को चरित्रार्थ करते हुए हमें मानव मात्र के कल्याण के लिए कार्य करना है। स्वामी जी ने कहा कि समाज के ज्वलन्त मुद्दे जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार,



नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न एवं शोषण के विरुद्ध आर्य समाज निरन्तर कार्यरत है। स्वामी जी ने युवाओं को प्रेरित करते हुए आह्वान किया कि आर्य समाज के भवनों से बाहर निकलकर आम जनता के बीच कार्य करें। उन्होंने कहा कि अन्धविश्वास और धार्मिक पाखण्ड से लोगों को मुक्त कराने का यह अच्छा समय है। क्योंकि आम जनता इन पाखण्डियों के कुकृत्यों को प्रतिदिन देख रही है। ऐसे समय में आर्य युवाओं को जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद व शिक्षाविद् डा.

सुशील गुप्ता ने कहा कि आज आर्य समाज की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है, महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र व आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज फिर समाज में कुरीतियों का बोलबाला हो रहा है, आर्य युवकों को चाहिए कि वह इन कुरीतियों खिलाफ आगे आकर जनचेतना लाने का कार्य करें। चरित्रवान युवाओं पर ही समाज का भविष्य टिका हुआ है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि धारा

370 व 35ए देश की एकता अखण्डता में बाधक है इसे अविलम्ब समाप्त किया जाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने समलैंगिकता को सभ्य समाज पर कलंक व भारतीय संस्कृति पर हमला बताते हुए केन्द्र सरकार से उसे पुनः अपराध की श्रेणी में रखने की मांग की। आर्य ने कहा कि आज समाज में बढ़ता हुआ पाखण्ड-अन्धविश्वास चिन्ता का विषय है जिससे युवाओं में धर्म के प्रति अरुचि हो रही है, आर्य युवा पाखण्ड और अन्धविश्वास के प्रति लोगों को जनजागृत करेंगे और धर्म के सच्चे वैदिक स्वरूप से अवगत करवायेंगे, गत दिनों बुराड़ी गांव में हुई घटना चिन्ताजनक है। परिषद् युवा



सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य

अन्धविश्वासों से दूर रहें

— डॉ. अशोक आर्य

माता—पिता जहाँ अपनी सन्तान को ग्रहण करने योग्य बातें सिखायें, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उन्हें अनेक प्रकार के मिथ्या विश्वासों, भूतप्रेत विषयक मूर्खतापूर्ण धारणाओं तथा विज्ञान एवं सृष्टिक्रम विरुद्ध मान्यताओं के जाल में फँसने से बचायें। भूतप्रेतों, डाकिनी, शाकिनी एवं योगिनी आदि कल्पित योनियों के प्रति अंधविश्वास यों तो संसार के सभी देशों में पाया जाता है, किन्तु भारत की धरती इसके लिए अधिक उर्वरा सिद्ध हुई है।

भूत—प्रेत तथा मृत व्यक्तियों की अशान्त आत्माओं द्वारा संसारी लोगों को पीड़ित करने के झूठे किस्से जनसाधारण में तो शास्त्र वाक्यों की भांति सत्य समझे ही जाते हैं। प्रायः देखा जाता है कि सुपठित तथा शिक्षित व्यक्ति भी इन मूर्खतापूर्ण धारणाओं के जाल से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते। ऋषि दयानन्द ने इस प्रसंग में मनुस्मृति के निम्न श्लोक को उद्धृत कर यह स्पष्ट कर दिया कि प्रेत शब्द वैदिक एवं आर्ष शास्त्रों में मृत व्यक्ति का वाचक है, न कि किसी भयावनी योनि विशेष का। श्लोक इस प्रकार है —

गुरो प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन् । प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्ध्यति ।। (मनु. 5/65)

यहाँ प्रेत शब्द मृतक शरीर का वाचक है जब कि प्रेतहार उन व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो मृत शरीर को उठाकर श्मशान तक ले जाते हैं। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूक भट्ट ने भी 'प्रेतस्य' का अर्थ 'मृतस्य' ही किया है। इसी प्रकार संस्कृत का 'भूत' शब्द भी अनेकार्थवाची तो है, किन्तु उससे किसी डरावनी योनि विशेष का अर्थ लेना उचित नहीं। संस्कृत साहित्य में भूत जो हो चुका, उत्पन्न, निर्मित, अतीत, जीवित प्राणी, जड़ तत्व आदि के अर्थों में आता है। शास्त्रों में भूतात्मा का प्रयोग जीवात्मा के लिए हुआ है। मनु जब विद्या और तप से भूतात्मा की शुद्धि की बात करते हैं। (5/106) तो टीकाकार कुल्लूक भट्ट इसका अर्थ (सूक्ष्मादिलिंगशरीरावच्छिन्नो जीवात्मा) करता है। उपनिषदों में 'भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः' का प्रयोग मिलता है। यहाँ सभी प्राणियों के लिए भूत शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्रायः देखा जाता है कि अनेक प्रकार के मानसिक रोगों के कारणों को न समझकर लोग ऐसे रोगियों में भूतप्रेत आदि हानिकारक योनियों का आवेश मान लेते हैं तथा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा न करा कर अनेक प्रकार के मंत्र तंत्र पुरश्चरण आदि अपकृत्यों द्वारा रोगी का उपचार कराते हैं। इस प्रसंग में ऋषि ने स्पष्ट किया है कि सन्निपात आदि शारीरिक और उन्माद आदि मानस रोगों के मूल कारणों का निदान न कर सकने के कारण अज्ञानी लोग यह मान लेते हैं कि रोगी में भूत—प्रेत, चुड़ैल आदि का प्रवेश हो गया है। वस्तुतः संस्कृत भाषा में भूतप्रेत से भिन्न यक्ष, राक्षस, पिशाच, नक्तंचर (निशाचर) आदि अन्य शब्द भी हैं जो जन सामान्य में अपयोनियाँ मानी जाती हैं। किन्तु यदि इनके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थों का विचार किया जाये तो इनसे ऐसे जीव जन्तुओं, कीटाणुओं तथा रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों का अभिप्राय लेना होगा जो मनुष्य शरीर को हानि पहुँचाते हैं। रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कृमि तथा विषाणु ही राक्षस, यातुधान तथा पिचाश हैं। ऐसे रक्षगणों (राक्षसों) को नष्ट करने वाला वैद्य ही राक्षोदा कहलाता है। इस विचार की पुष्टि पाश्चात्य लेखकों ने भी की है। बैबिलोनिया और असीरिया की मिथक कथाओं का विवेचन करने वाला विद्वान् डोनाल्ड मैकेंजी लिखता है "Germs of diseases were depicted by lively imagination as invisible demons who derived nourishment from the human body." (सत्यार्थ प्रकाश, भाष्य, पं. वाचस्पति लिखित से उद्धृत पृ. 119) अर्थात् विभिन्न रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों की अदृश्य राक्षसों के रूप में कल्पना कर ली गई। ये राक्षस कहलाने वाले क्रिमि शरीर से ही पोषण प्राप्त करते हैं।

तथापि यह स्वीकार करना होगा कि भूत—प्रेत आदि के नाम पर उल्लू सीधा करने वाले पाखण्डी लोगों की भी इस संसार में कमी नहीं है। ऐसे दुष्ट प्रकृति के लोग भोले भाले

लोगों की अंधविश्वासजन्य प्रकृति का लाभ उठाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। ऐसे तथाकथित ओझा तथा झाड़फूंक करने वाले लोगों को स्वामी दयानन्द धूर्त, महामूर्ख, पाखण्डी, अनाचारी तथा स्वार्थी कहते हैं तथा जन साधारण को इनसे बचने का उपदेश देते हैं। भूत—प्रेत आदि के मिथ्या प्रवादों को फैलाने तथा इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करने में कभी—कभी ऐसे लोग भी सहायक सिद्ध होते हैं जिनसे हम इस प्रकार के अंधविश्वासों को प्रचारित करने की आशा भी नहीं रखते। आज के सनसनीखेज पत्रकारिता के युग में अनेक पत्र—पत्रिकाएँ भूत—प्रेत विशेषांक प्रकाशित करती हैं। यंत्र मंत्र डोरा धागा ताबीज आदि के बहाने लोग अपनी दूकानदारी चलाते हैं। हिन्दी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका वर्ष में एक बार भूत—प्रेत विशेषांक निकालती हैं जिसमें कपोल कल्पित कहानियों के द्वारा पाठकों को अंधविश्वासी बनाया जाता है। कहानी पत्रिका मनोहर कहानियाँ भी ऐसे विशेषांक प्रकाशित करती है। ऋषि दयानन्द की सम्मति में ऐसे पाखण्डों का सर्वथा उन्मूलन तभी सम्भव है जब जनसाधारण में जागरूकता पैदा की जाये। इसके लिए मनुष्य के चिन्तन और विचार में आमूलचूल क्रांतिकारी परिवर्तन लाना आवश्यक है। मानव जब तक अपने में वैज्ञानिक सोच पैदा नहीं करता तथा



प्रत्येक विचार तथा कृत्य को तर्क की कसौटी पर कसता नहीं, तब तक बौद्धिक विकास में बौना ही रहता है।

बालकों का चित्त अत्यन्त कोमल तथा प्रत्येक प्रकार के संस्कार को ग्रहण करने में प्रवृत्त रहता है। यदि बाल्यकाल में उनको भूत—प्रेतों की कल्पित कहानियाँ सुनाई जायें तो आगे चलकर वे इस प्रकार के अंधविश्वासों से कभी मुक्त नहीं होंगे। इसलिए माता—पिता का यह आवश्यक कर्तव्य हो जाता है कि वे सन्तान के कानों में ऐसी मिथ्या विश्वासपूर्ण कथायें पढ़ने ही न दें। जहाँ ओझा और भूत—प्रेत का निवारण करने वाले ढोंगी पुरुष अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मनोवैज्ञानिक रोगों से ग्रस्त स्त्री—पुरुषों की चिकित्सा के बहाने अनेक प्रकार के पाखण्ड रचते हैं तथा उनसे देवता की भेंट तथा प्रसाद के नाम पर धनहरण का षड्यन्त्र रचते हैं, वहाँ स्वामी दयानन्द की बताई युक्ति का प्रयोग ही समीचीन है। महाराज का यह स्पष्ट आदेश है कि जो कोई बुद्धिमान उनकी भेंट पांच जूता, दण्ड व लपेटा लात मारें तो उनके हनुमान, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं। क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ ढोंग है।

फलित ज्योतिष तथा ग्रह शान्ति का पाखण्ड ।

बच्चों को जहाँ भूत प्रेतादि के कल्पित भय से दूर रखना आवश्यक है वहाँ यह भी जरूरी है कि वे भाग्यवादी न बनकर पुरुषार्थवादी बनें। भारत में जहाँ भूगोल, खगोल तथा ज्योतिष आदि वैज्ञानिक अध्ययनों का विकास हुआ वहाँ फलित ज्योतिष, फलादेश, भविष्य कथन, हस्तरखा, सामुद्रिक शास्त्र जैसे पाखण्डपूर्ण विधि विधानों का भी प्रचलन हुआ जो मनुष्यों को परिश्रम तथा अध्यवसाय से विमुख कर मात्र भाग्य पर निर्भर रहना सिखाते हैं। फलित ज्योतिष का ही एक अंग जन्मपत्र बनाना तथा फलादेश सुनाना है। गणित ज्योतिष एक परिपूर्ण विज्ञान है जो गणितीय प्रक्रियाओं से वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालता है

जबकि फलित सर्वथा कपोल कल्पित तथा युक्ति एवं तर्क विरुद्ध वाग्जाल मात्र पाखण्ड है। इन फलितज्ञ ज्योतिषियों को स्वामी दयानन्द ने ज्योतिर्विदाभास कहा है। भोले भाले गृहस्थों के द्रव्यापहरण का षड्यंत्र रचकर वे स्वनिर्मित जन्मपत्र का वाचन करते हैं और क्रूर ग्रहों का भय दिखलाकर उनकी शांति के लिए विभिन्न प्रकार के पूजा पाठ दान आदि करवाते हैं।

तथ्य तो यह है कि पृथ्वी की ही भांति सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, शनि आदि सभी ग्रह जड़ हैं तथा वे मनुष्य के भाग्य का फैसला करने में असमर्थ हैं। वेदमंत्रों के वास्तविक भाव को न समझ कर मध्यकालीन आचार्यों ने जब वैदिक यज्ञों को जटिल कर्मकाण्ड बहुल तथा मात्र शब्द साम्य के आधार पर अनेक निरर्थक कर्मों में मंत्रों के विनियोगों का विधान किया तो नवग्रहों की पूजा में कतिपय मंत्रों को नियोजित कर दिया गया। उदाहरणार्थ सविता देवता का मंत्र 'आ कृष्णेन रजसा' (यजु. 33/43) सूर्य का वाचक माना गया तो 'उदबुध्यस्वाग्ने' (यजु. 15/54) को 'बुध' का बोधक स्वीकार किया गया। सर्वाधिक हास्यास्पद तो 'शनि' के लिए विनियुक्त मंत्र व्यवस्था थी, क्योंकि 'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तुनः (यजु. 36/12) में प्रयुक्त 'शं नो' पद जहाँ हमारे लिए कल्याण और मंगल का अर्थ देते हैं वहाँ उन्हें एक ही मान कर शनैश्चर के लिए प्रयुक्त मान लिया गया। ऐसे विनियोग रूप समृद्ध नहीं थे।

इस प्रकार फलित ज्योतिष के छलावे और प्रपंच का रहस्योद्घाटन कर ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया कि ज्योतिष शास्त्र तो मिथ्या नहीं है क्योंकि उसके अन्तर्गत अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या तथा अन्तरिक्ष विद्या आदि जो विषय आते हैं वे तो सभी विज्ञान के अनुकूल हैं जबकि ग्रहों के क्रूर अथवा सौम्य होने तथा किसी व्यक्ति के भाग्य में निर्णायक होने का विचार सर्वथा मिथ्या एवं प्रमाण रहित है। अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन तथाकथित ज्योतिषियों ने अनेक कपोल कल्पित श्लोकात्मक ग्रन्थ भी बनाये जिनमें ऐसी—ऐसी मिथ्या बातें लिखी हैं मानों आदमी का भूत वर्तमान और भविष्य सब कुछ इन ज्योतिषियों के ही अधिकार में हैं। यथा एक फलित ग्रन्थ में लिखा है —

शानिक्षेत्रे यदा भानुः भानुक्षेत्रे यदा शनि ।

सदा एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ।।

अर्थात् शनि के क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो बालक होते ही मर जायेगा, चाहे साक्षात् शंकर ही उसके रक्षक क्यों न हों? वस्तुतः यह सारा पाखण्ड और प्रपंच गृहस्थियों के धन का हरण करने के लिए ही रचा गया था। फलित के नाम पर चलने वाले पाखण्ड को ही दृष्टि में रखकर आर्षप्रज्ञा के धनी आचार्य विष्णुगुप्त ने अपने अर्थशास्त्र में लिखा था —

नक्षत्रमति पृच्छन्तं बालमर्थोऽतिवर्तते ।

अर्थो ध्यर्थस्यं नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः ।।

(9/142/4)

अर्थात् नक्षत्रों के फल को पूछने वाला राजा बाल बुद्धि ही है। वह अपने अभीष्ट फल को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि अर्थ की बुद्धि के लिए तो पुरुषार्थ अपेक्षित होता है। ये तारे (ग्रह) हमारा क्या हानि लाभ करेंगे?

इस प्रकार फलित ज्योतिष, ग्रहशांति आदि पाखण्ड जाल को छिन्न—भिन्न कर जन्म पत्र को शोक पत्र बता ऋषि दयानन्द ने मानव को तर्कसिद्ध विचारों को स्वीकार करने और पुरुषार्थ युक्त जीवनयापन करने का परामर्श दिया।

फलित ज्योतिष की ही भांति शीतला जैसे अप—देवी—देवताओं की पूजा अर्चना आदि को भी पाखण्ड ही मानना चाहिए। हमारे देश में तो चेचक जैसी छूत की बीमारियों को भी शीतला जैसी कल्पित देवी के प्रकोप का परिणाम माना जाता है। ऐसे लोगों की समुचित चिकित्सा कराने की अपेक्षा अज्ञानी लोग डोरा, गण्डा और ताबीज के चक्कर में पड़ते हैं जिससे रोगी का मृत्युमुख गामी होना अवश्यम्भावी हो जाता है।

— नवलखा महल, उदयपुर, राजस्थान

दयानन्द मठ चम्बा का 38वाँ वार्षिकोत्सव एवं 18वें दुर्लभ शारद यज्ञ की पूर्व सूचना आओ चलें दयानन्द मठ चम्बा की पुण्यभूमि में क्योंकि वहाँ उपह्वरे गिरीणाम् संगमे च नदीनाम् ।

पर्वतों के आंचल में, पवित्र रावी नदी के किनारे पर विद्यमान पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज की इस तपःस्थली पर शिव की धूनी प्रज्वलित हो गयी है। प्रति वर्षों की भांति महान तपस्वी सन्त पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का प्रियतम दुर्लभ शारद यज्ञ तथा दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम व 7 अक्टूबर 2018 से 11 अक्टूबर 2018 तक इस वर्ष भी आरम्भ हो रहा है। इसलिए

हे अग्न- अग्नि स्वरूप विद्वद्जनों, ज्ञानियों, मनीषियों, यज्ञ प्रेमी सज्जनों

गृणान:- इस पुण्य भूमि पर आप लोगों का आवाहन किया जा रहा है।

सत्कारपूर्वक आप लोगों को आमन्त्रित किया जा रहा है। आओ वीतए- संसार में हो रहे घोर विनाश, पापाचार रुपी अन्धकार को दूर करने, तथा उसके स्थान पर ज्ञान के प्रकाश तथा यज्ञों की परम्परा को जारी करने का संकल्प मन में संजोकर।

हव्यदातए- इस शिव की धूनि में इस यज्ञ में हवि समर्पित करने के लिए होता- यज्ञमान बनकर वहिषि- पूज्य स्वामी जी के द्वारा निर्मित इस यज्ञशाला में चारों ओर से आकर विराजमान हो जाईए। इससे हमारे व आप सभी के द्वारा श्रद्धा व निष्ठा से किए गए इस महान यज्ञ कर्म से संसार का, प्राणीमात्र का महान कल्याण होगा। चूँकि अयम् यज्ञो भुवनस्यनाभिः- यह यज्ञ संसार की नाभि है। यज्ञेन देवताभ्यः यज्ञ से देवजन प्रसन्न होते हैं। यज्ञ से परम तृप्ति को प्राप्त देव - देवाः पान्तु यज्ञमानं निवृत्थात् यज्ञमान को यज्ञकर्ताओं को विनाश से बचाते हैं। इसलिए हम यज्ञ कर्ताओं का भी स्वतः ही महान कल्याण हो जाएगा। बन्धुओं पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के कुशल दिशा निर्देश में 7 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक चलने वाला यह कार्यक्रम आकर्षक, अह्लादकारी मनोहारी, तथा सम्मोहक होगा। अतः प्रथम दिन से ही आनन्द की सरिता में डुबकियाँ लगाने के लिए तथा यज्ञ व सत्संग का भरपूर आनन्द उठाने के लिए पहले ही अपनी उपस्थिति दर्ज करा लें। नहीं तो प्रथम त्रिदिवसीय यज्ञ व सत्संग के साथ-साथ महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले 7 व 8 अक्टूबर के कार्यक्रमों से भी आप लोग वंचित हो जायेंगे। अतः समय पर दर्शन दें।

कार्यक्रम

7 से 9 अक्टूबर तक

प्रातः - 6 से 8 बजे तक यज्ञ, 8 से 9 बजे तक भजन, 9 से 10 बजे तक उपदेश।

सायं - 4 बजे से 5.30 बजे तक यज्ञ, 5.30 से 6.15 तक भजन, 6.15 से 7 बजे तक उपदेश

विशेष:- 7 व 8 अक्टूबर को प्रातः 1 से 4 बजे तक आदर्श विद्यालय के छात्रों का कार्यक्रम।

दुर्लभ शारद यज्ञ:- 10 अक्टूबर प्रातः 6.30 से ऋग्वेद में वर्णित, वीतराग महान त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी पूज्य स्वामी जी महाराज का प्रियतम-दुर्लभ शारद यज्ञ का सफर आरम्भ हो जाएगा। जो ऊषा काल, प्रभातकाल, मध्यकाल, सायंकाल तथा रात्रि के चारों प्रहरों को पार करता हुआ पुनः उषा काल में प्रवेश करते हुए 11 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हो जाएगा। बीच में इस सफर को आसान व रुचिकर बनाने के लिए संगीतज्ञों के संगीत का सहारा भी लिया जाएगा। विद्वत्जनों के सरल, सरस, मधुर वचनों का सोमपान भी कराया जाएगा। इष्टान् भोगान् हि ते देवाः दास्यन्ते यज्ञभाविताः यज्ञ से प्रसन्न देवजन आप लोगों को अभिलाषित भोगों को देने वाले बनें, आप सबकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले हो, इसके लिए यदि आप अपनी कमाई को पूत व पवित्र बनाना चाहते हो, उसे यज्ञ का भाग बनाना चाहते हो, और स्वयं यज्ञ शिष्टाशी

यज्ञ शेष खाने वाला बनना चाहते हो, बिधशाशी निष्पाप अन्न को खाना चाहते हो, निष्पाप भोगों को भोगना चाहते हो, और इसी निमित्त से, इसी भाव से, अपनी ओर से यज्ञ हेतु कोई राशि भेजना चाहते हो, इसके लिए आप लोगों की सुविधा के लिए मठ का बैंक खाता नम्बर नीचे दिया जा रहा है, उसमें राशि जमा करा सकते



हो। अथवा दयानन्द मठ चम्बा के नाम से ड्राफ्ट अथवा बैंक सीधे भेज सकते हो। मठ को दिया गया दान 80-जी के दायरे में आता है। इसी को कहते हैं आम के आम गुठली के दाम, पुण्य कर्म में दान भी दे दिया और टैक्स में छूट भी मिल गयी। आप लोगों के सहयोग राशियों से सम्पन्न होने वाले इस यज्ञ का जो फल प्राप्त होगा, उसके विषय में कह नहीं सकते - वह अपरमित होगा, अकथनीय होगा, अकल्पनीय होगा, मनोवांछित होगा। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं ब्रह्म वर्चस्व को देने वाला यज्ञमान- तथा आप सभी की सब प्रकार से वर्धय - संरक्षण व संवर्धन करने वाला होगा।

दयानन्द मठ चम्बा

भारतीय स्टेट बैंक चम्बा खाता न0-11149833806

IFSC NO-SBIN0000626, CIF NO-80932484893

खाते में राशि जमा करने के बाद- 098050-22871

अथवा 01899-222871 इन नम्बरों में से किसी एक पर सूचना अवश्य दे दें ताकि रसीद भेजने में आसानी रहेगी।

- सूचक व निवेदक

आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ चम्बा-176310 (हि.प्र.)

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित अनुपम साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध

33 पुस्तकों का 620/- रुपये का सैट
मात्र 370/- रुपये में प्राप्त करें

1. यजुर्वेद	250.00	17. वेद का इस्लाम पर प्रभाव	3.00
2. बन्दा वीर बैरागी	18.00	18. वैदिक धर्म की रूपरेखा	22.00
3. आस्तिक नास्तिक संवाद	7.00	19. वैदिक कोष संग्रह	15.00
4. वेद संदेश	10.00	20. विवेकानन्द विचार धारा	8.00
5. आत्मा का स्वरूप	8.00	21. विषलता इस्लाम की फोटो	8.00
6. आचार्य शुक्रराज शास्त्री	5.00	22. वैदिक सिद्धान्त	20.00
7. आर्य ध्वज	3.00	23. धर्मान्तरण	10.00
8. आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या	20.00	24. नारायण स्वामी जीवनी	8.00
9. गो-हत्या या राष्ट्र हत्या	15.00	25. काशी शास्त्र	3.50
10. दयानन्द वचनामृत	5.00	26. आदर्श त्रैतवाद	35.00
11. इक्कीसवीं सदी का भारत	4.00	27. ब्रह्म उपासना	8.00
12. मुगल साम्राज्य का क्षय भाग-1, 2	20.00	28. वेद निबन्ध स्मारिका	30.00
13. मुगल साम्राज्य का क्षय भाग-3, 4	15.00	29. आर्य समाज के संगठनात्मक सूत्र	20.00
14. वेदांग प्रकाश	20.00	30. श्रद्धांजलि	12.00
15. वैदिक सूक्ति सुधा	5.00	31. शिखों का तुष्टिकरण	2.00
16. वेद और आर्य शास्त्रों में नारी	4.00	32. एक ही मार्ग	3.00
		33. मतान्तरण के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र	4.00

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित उपरोक्त 33 पुस्तकों का 620 रुपये का सैट महर्षि निर्वान दिवस (दीपावली) पर 40 प्रतिशत की विशेष छूट पर मात्र 370 रुपये में दिया जा रहा है। डाक से भेजने पर डाक व्यय 130 रुपये अलग से देने होंगे, इस तरह से डाक से मंगाने वाले महानुभावों को कुल 500 रुपये भेजने होंगे। यह राशि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं और यदि स्वयं आकर ले जाते हैं तब उन्हें डाक व्यय नहीं देना होगा।

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

आध्यात्मिक जीवन ही मानवता का लक्ष्य

— स्वामी श्रीकृष्णयोवाश्रमजी महाराज

प्रभु की सृष्टि में मानव का स्तर सबसे उच्च माना गया है। क्योंकि मनुष्य अपने बुद्धियोग से अक्षुण्ण सुख की प्राप्ति कर सकता है, इसकी सुख प्राप्ति के निमित्त ही सम्पूर्ण जगत् है। वेद, शास्त्र, उपनिषद्, इतिहास आदि भी मानव लक्ष्य का अनेक प्रकार से प्रतिपादन करते हुए उत्सर्ग एवं अपवादरूप वाक्यों द्वारा निरतिशय सुख की ओर इसे ले जाते हैं। अतएव यदि मानव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं होता तो वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं।

पाणिनीय व्याकरण में 'तस्यापत्यम्' इस सूत्र से मनु महर्षि के अपत्य को 'मानव' कहा गया है 'मनोरपत्य पुमान् मानवः'। इसके साथ ही 'मनोर्जातावंयतौषुक् च' इस सूत्र के अनुसार मनु शब्द से जाति अर्थ में अञ् और यत् प्रत्यय के साथ भुक् का आगम करके शब्द जातिवाचक 'मानुष' सिद्ध किया गया है। 'मानव का भाव अथवा कर्म' इस अर्थ में 'तल' प्रत्यय जोड़कर 'मानवता' की निष्पत्ति हुई है। अर्थात् मनु महर्षि के विधान के अनुसार अपनी शारीरिक, मानसिक और वाचिक हलचलों को तथा प्राणि पाद द्वारा होने वाले कर्मों को नियंत्रित करने वाले का नाम 'मानव' है। इसीलिए मानवता के विरुद्ध भाव रखने वाला माणव' कहा गया है। अर्थात् वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं।

अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोर्त्सर्गिकः स्मृतः।

नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिद्धयति माणवः।।

अर्थात् 'मनु' शब्द से औत्सर्गिक 'अण' और नकार को 'णत्व' होकर कुत्सिक अपत्य और मूढ अर्थ में 'माणव' शब्द का प्रयोग होता है। इससे यह स्पष्ट है कि मानव शब्द का प्रयोग शास्त्रीय मार्ग से व्यवहार करने वाले व्यक्ति के लिए ही है और शास्त्रीय क्रियाएँ ही मानवता कही जायेंगी। इसी प्रकार आध्यात्मिक शब्द भी —

आत्मनि इत्यध्यात्मम्, अध्यात्मभवमाध्यात्मिकम्।

अर्थात् आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला जीवन आध्यात्मिक दुःख की निवृत्तिपूर्वक आध्यात्मिक सुख प्राप्ति ही मानवता का लक्ष्य होना चाहिए।

आध्यात्मिक उपेक्षा :- आज का मानव बौद्धिक तत्वों को प्रधानता देता हुआ बुद्धि बल पर जीवित रह उसी के द्वारा सर्वेष्ट साधन का अभिमान करता है। उसका कहना है कि बुद्धि द्वारा बुद्धिमानों ने देश काल और पात्रों की परिस्थिति के अनुसार स्मृति आदि का निर्माण किया और इनके द्वारा कुछ वर्गों का संचालन और संचालित वर्गों के हानि लाभ का प्रदर्शन दृष्टान्त और आख्यानों द्वारा किया, जिसे प्रमुखतः 'ब्राह्मण सभ्यता' के नाम से कहा जा सकता है। बुद्धि का विकास जैसे-जैसे होता है, मानव वैसे-वैसे ही अपने सुख साधनों का अन्वेषण और उनका उपभोग करके कृतकृत्यता का अनुभव करता है। बौद्धवाद ही भौतिकवाद की जड़ है। मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार बुद्धि को ऐसे क्षेत्रों में दौरा करना पड़ता है कि वह अपनी आवश्यकता का परिहार सोच लेता है और उससे नितान्त संतोष एवं आनन्द का अनुभव करता है। जैसे-जैसे जड़वाद की उन्नति होती जाती है, वैसे-वैसे आध्यात्मिकता से बहिर्मुखता भी होती चली जाती है, क्योंकि मनुष्य बाह्य वस्तुओं को ही सुख-साधन मान लेता है। उसके ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय और मन बाहर की ओर ही दौड़ लगाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह नई-नई आवश्यकताओं के अन्वेषण में इतना विकल और व्यस्त हो जाता है कि उसके अतिरिक्त अन्य भी कोई वस्तु है, इसका उसे अनुभव ही नहीं हो पाता। अन्त में वह जड़वादी स्वर्जित और स्वनिर्मित पदार्थों के उपभोग की क्षमता से क्षीण होकर व्यथित और किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाता है तथा अपनी आत्मबहिर्मुखता पर पश्चाताप करता है।

आध्यात्मिक दुःख :- संसार में आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीन दुःख प्रसिद्ध हैं। आधिभौतिक दुःख मनुष्य पशु-मृग-पक्षी, सरीसृप स्थावर आदि के द्वारा प्राप्त होता है। इनकी निवृत्ति बाह्य उपायों से होती है। आधिदैविक दुःख प्राकृतिक आपदा हैं। आध्यात्मिक दुःख दो प्रकार का है — शारीरिक और मानसिक। शारीरिक दुःख वात-पित्त और श्लेष्मा का

विषमता से अनेक प्रकार के होते हैं तथा मानसिक दुःख काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्यादि, विशेष, विषय निबन्ध अतएव विविध होते हैं। ये दुःख आन्तरोपाप साध्य हैं।

धीर्धैर्यमात्मविज्ञानं मनोदोषौषधं परम्।

इस आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि, धैर्य एवं आत्मविज्ञान मन के दोषों को शान्त करने की परम औषध हैं।

आध्यात्मिक दुःख की शाखा :- शारीरिक दुःख वात, पित्त और कफ की विषमता के कारण अनेक प्रकार से शरीर को अभिव्याप्त करते हैं। वातज दोष शरीर को स्तब्ध कर संचालन क्रिया का अवरोध करके उसे पंगु और चेष्टाहीन बना देते हैं। इसी प्रकार पित्त-प्रकोपजन्य रोग भी रक्तचाप, व्रण-विस्फोटदि अनेक प्रकार के होते हैं। कफ रोग कास-श्वसादि द्वारा मानव देह का सदैव विघटन करते और उसे दुर्बल बनाते रहते हैं। मानसिक दुःखों के विषय में तो कहना ही क्या है, एक-एक मानसिक दोष साक्षात् नरक का द्वार बन बैठता है। काम को ही लीजिए यद्यपि 'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ' इत्यादि वाक्यों के अनुसार धर्म से अविरुद्ध काम भगवान का स्वरूप है, तथापि मन का कुछ और ही संकल्प रहता है और वह इस भावना को 'कामातुराणां न भयं न लज्जा' तक पहुँचा देता है। इसी प्रकार —

क्रोधान्धस्य विवेक शून्यमनसः किं किं न क्रियते कटु।

लोभः प्रसूतिः पापस्य लोभः पापस्य कारणम्।।

इत्यादि अनेक प्रमाणों से मानसिक दुःख अनेक अनर्थों

साधनों तथा उपायों का वर्णन है। वर्णधर्म एवं आश्रमधर्म इसकी प्रधान भित्तियाँ हैं। जहाँ वर्णधर्म और आश्रमधर्म नहीं हैं, वहाँ आत्मसाक्षात्काररूप मानव लक्ष्य की पूर्ति की सम्भावना ही नहीं की जा सकती है। जिन-जिन वस्तुओं के सेवन का निषेध शास्त्रकारों ने लिखा है, उसको उसी प्रकार मानना तथा आचरण करना कल्याण का हेतु और लक्ष्य का साधक है। इसके साथ-साथ जो सार्वभौम धर्म हैं, उनका भी आचरण करना अनिवार्य है।

सार्वभौम धर्म —

सत्यमस्तेयमक्रोधो हिः शौचं धीर्धृतिर्दमः।

संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्वउदाहृतः।।

सत्य, चोरी न करना, अक्रोध, लज्जा, पवित्रता, बुद्धि, मनःसंयम, इन्द्रियसंयम, विद्या आदि सार्वभौम धर्म हैं। इन धर्मों के पालन किये बिना मानव लक्ष्यसिद्धि पर नहीं पहुँच सकता। जिन देशों में तथा जिन वर्गों में वर्णाश्रम व्यवस्था नहीं है, वहाँ आध्यात्मिक सुख स्वप्न में भी प्राप्त नहीं हो सकता, यह ध्रुव सत्य है।

कुछ लोग समय के साथ-साथ मानव व्यवस्थापक धर्म शास्त्रों के परिवर्तन की बात कहते हैं, यह उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि शास्त्रों का सिद्धान्त सार्वभौम और अपरिवर्तनीय है, यह बात अनेक बार सिद्धान्त सिद्ध हो चुकी है। मनुष्य अपनी दुर्बलता का आच्छादन इस प्रकार से करने की चेष्टा करता है, जो सर्वथा व्यवहारायोग्य है। अतएव धर्मपूर्वक व्यवहार करने से गृहस्थ भी मुक्त होने का अधिकारी बन जाता है —

न्यायागतधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः।

श्राद्धं कृत्, सत्यवादी च गृहस्थोऽपिहिमुच्यते।।

अर्थात् न्यायपूर्वक धनार्जन करने वाला, तत्त्व ज्ञान में निष्ठा रखने वाला, सत्यभाषी, अतिथिसेवी और जीवित पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा करने वाला गृहस्थ भी मुक्त हो जाता है। यही आध्यात्मिक जीवन है और इसी की प्राप्ति के लिए यत्न करने में 'मानवता' की सार्थकता है।

छीना-झपटी :- आज भौतिकवाद से आक्रान्त मनुष्य का दृष्टिकोण धर्म और ईश्वर से हटकर अनाधिकार चेष्टाओं में अनवरत देखा जा रहा है। वर्ण और आश्रम की मर्यादाओं को तोड़ने के लिये आन्दोलन चल रहे हैं। जब मानव अपने देश, अपनी जाति, अपने धर्मग्रन्थों पर अविश्वास करके अन्य देश, जाति और धर्म की बात करता है, तब इसका सीधा अर्थ है कि वह कहीं भी सफल नहीं हो सकता। इसीलिए

गीता में भगवान ने कहा है —

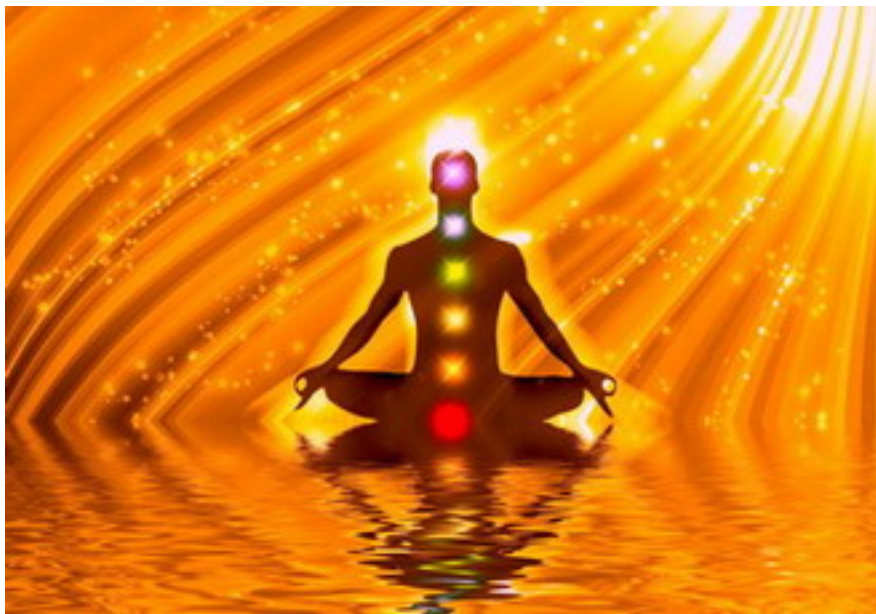
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

अपना धर्म ही सब कुछ है। उसमें किसी प्रकार का कष्ट भोगते हुए भी परधर्म की अपेक्षा सौष्ठव है। इसीलिए भारतीय इतिहास के समुज्ज्वल रत्न अपनी मर्यादाओं की रक्षा के लिए बलि वेदी पर चढ़े, उन्होंने प्राण तक दिये और अपना सब कुछ खोकर भी मर्यादाओं की रक्षा की। प्रवाह में बहना मुर्दों का काम है। साहसी और जिन्दा दिल प्रवाह के प्रबल पात से अपने को सुरक्षित करते हुए मानवता का संरक्षण करते हैं तथा सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहते हैं।

उपसंहार :- मानव जीवन की सार्थकता और कृत्यकृत्यता आध्यात्मिक सुख-शांति में है। उसके लिए सदैव जागरूक रहना चाहिए। चित्त का संशोधन अनेक उपायों से करना चाहिए। परदोष, परनिन्दा, परस्वापहरण की भावनाएँ जो आज मानव को दानव बना रही हैं, इनसे बचना चाहिए। असत्यभाषण का अवरोध, सत्य भाषण की चेष्टा सदैव करनी चाहिए; तभी मनुष्य अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकता है और मानव शरीर की सफलता प्राप्त कर सकता है। अन्यथा —

तस्यामृतं क्षरति हस्तगतं प्रमादात्।

के अनुसार मानव अमृत के आये हुए घट को अपने हाथ से गिराकर प्रमाद का परिचय देगा। अतः आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्न करना चाहिए।



पृष्ठ-1 का शेष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40 वें स्थापना दिवस पर 'राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन'

पीढ़ी को संस्कारित व चरित्रवान बनाने के लिए व्यापक अभियान चलायेगी, उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण, देशभक्त युवा पीढ़ी का निर्माण आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी ने कहा कि आज देश की 67 प्रतिशत आबादी युवाओं की है, लेकिन उनके लिए देश व समाज के पास कोई योजना नहीं है, हमें युवा पीढ़ी को पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम वाद से बचा कर उनमें नैतिक शिक्षा, देशभक्ति, ईमानदारी, जातिवाद विहीन समाज की संरचना के लिए कार्य करना होगा। समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता दर्शन अग्निहोत्री ने की, उन्होंने कहा कि आज प्रत्येक आर्य समाजी को एक व्यक्ति को बदलने का संकल्प लेना है जिससे कृपन्तो विश्वमार्यम् के सन्देश को हम सार्थक कर सकें।

पूर्व महापौर सुभाष आर्य, पार्षद कैलाश सांकला, पूर्व पार्षद यशपाल आर्य, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, राष्ट्रीय कवि प्रो.



सारस्वत मोहन मनीषी, डा. विवेक आर्य, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, आचार्य सन्दीप दर्शनाचार्य (सोनीपत), महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, रामकृष्ण शास्त्री (राजस्थान), सुभाष बब्बर (जम्मू), प. धनेश्वर बेहरा (उड़ीसा), मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट), जितेन्द्र सिंह आर्य (फरीदाबाद), आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), विभु आर्य (जबलपुर), स्वतन्त्र कु करे जा (करनाल), मनोहरलाल चावला (सोनीपत), माया प्रकाश त्यागी (गाजियाबाद), आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़), प्रवीन आर्य, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, प्रवीन आर्या, कविता आर्या,

राधा भारद्वाज, गायत्री मीना, वीरेश भाटी, देवेन्द्र भगत, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, धर्मपाल आर्य आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सम्मेलन में 10 सूत्री प्रस्ताव भी पारित किये गये।

विशिष्ट अतिथियों में राजीव कुमार परम, रामेश्वर गोयल, सुरेन्द्र कोहली, चौ. ब्रह्म प्रकाश मान, डा. गजराज सिंह आर्य, यशवीर आर्य, रवि चड्ढा, आर.पी. सूरी, रामकुमार सिंह, सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य आदि उपस्थित थे। कर्मठ कार्यकर्ताओं को "आर्य श्रेष्ठी अवार्ड" से विजय आर्य (इन्द्रापुरम), अमर सिंह सहरावत (दिल्ली) व "आर्य युवा रत्न अवार्ड" से वरुण आर्य, पवन सिंह, कु. प्रगति व सौरभ आर्य (यमुना नगर) को सम्मानित किया गया।

— देवेन्द्र भगत—प्रवीन आर्य, प्रेस सचिव
फोन: 9958889970, 9911404423



डॉ. भवानीलाल भारतीय का निधन आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति है

— स्वामी अग्निवेश

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्, लेखक तथा मनीषी डॉ. भवानीलाल भारतीय के निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। वे वैदिक सिद्धान्तों के उच्च कोटि के मर्मज्ञ एवं मनीषी थे। अनेक प्रतिष्ठित ग्रन्थों के लेखन एवं प्रकाशन के द्वारा उन्होंने आर्य समाज के इतिहास में अग्रणी स्थान प्राप्त किया है। अपनी लेखनी में भाषा एवं शैली की प्रखरता से वे अपने आपमें सिद्धहस्त



लेखक की उपाधि से विभूषित थे। महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं उनके कार्यों पर जितना प्रामाणिक साहित्य उन्होंने तैयार किया उसके लिए वे सदैव स्मरण किये जायेंगे। भारतीय जी के जाने से आर्य लेखकों की श्रृंखला की एक मजबूत कड़ी टूट गई है। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिजनों के प्रति सांत्वना व्यक्त करता हूँ।

केरल में आई जल प्रलय से मानवता हुई त्रस्त पीड़ितों को राहत पहुँचाने के लिए आर्य समाज ने बढ़ाये कदम

केरल में 100 साल की सबसे बड़ी आपदा से जूझ रहे केरल वासियों को सहायता पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने विस्तृत योजना बनाई है। वहाँ पर आम व्यक्तियों की सहायता करने के लिए सार्वदेशिक सभा की तरफ से एक टीम शीघ्र केरल जाने के लिए तैयार है। पीड़ितों को भोजन, नये वस्त्र, दवाईयाँ तथा अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए आर्यजनों से अपील है कि वे दिल खोलकर सहयोग प्रदान करें जिससे

पीड़ित केरल वासियों को सहायता प्रदान की जा सके। अपना सहयोग बैंक/ड्राफ्ट तथा धनादेश के द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम अति शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आप अपना सहयोग सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बचत खाता संख्या : 600110100005689, IFSC Code :- BKID0006001, बैंक ऑफ इण्डिया, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2, में भी जमा करा सकते हैं।

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री, पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतवितततापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मदेशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सूनतविचारवर्धकं तादृशं मङ्गलमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्चाविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्थाः। इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय

सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथं मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूमि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमेश्वरः।

यजुषि प्रतिपादितम्

The Three Entities

Eternality of God, Soul and Matter are imperishable as revealed by the Vedic Scriptures:

ओ३म्, वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्तम शरीरम्
ओ३म् कृतो स्मर क्लिबेस्मर कृतं स्मर।

AUM VAYU ANILAM AMARTAM
ATHAYDAM BHASMANTAM SHARERAM,
AUM KRITO SMAR KLIBEY SMAR
KRITAMSMAR

Elucidation:

It should always be borne in mind that God is eternal and so are the souls and matter. But God is Omniscient, Omnipotent and Omnipresent. He is our supreme Hearer and Supreme knower. He knows all innermost processes of our heart. As a matter of fact, He is a foreknower of the unborn thoughts of our mind. If there are two men who hatch a conspiracy to commit a heinous crime He stands there as the third entity to watch their pernicious action. Nothing is hidden from them.

The Veda says "If you want to attain His sight, remember "OM" and recite it as many times as possible during the day. In this name, all the names of God are intermingled. Other names lead to his attribution. Lord Rama and Lord Krishna used to recite 'OM' and even Yamacharya has advised Nachiketa in the recitation of 'OM'. It creates these letters

(1) Akar: O Virat, Agni and Vishav etc.

(2) Ukar: Hiranyagarbha, Vayu and Tejas etc.

(3) Maker: Ishwar, Aditya & Pragya etc.

It has been addressed to the soul etc. If she wants to have a glimpse of God, she should remember God is letter and spirit and also recite OM. It would lead to salvation. God is illumining like the sun both inside and outside the entire universe. He is creator and holder of the sun, the earth and of other planets. He alone is the abode of the entire inanimate and animate world. He alone and none else is the best friend, protector and sustainer of us all, just as a good benevolent king, loves protects and sustains his subjects. Thou who worship

are not away from Him but concentrate on him and reap the good fruits of this world and always remain happy and enjoy his blissfull blessings. Just as sons live comfortably and in constant happiness in father's house so do those who are devotees of the Supreme soul live in constant pleasure provided they worship Him alone with heart and soul who is formless and all pervading.

The Vedic Philosophers are of the view that there are two regions of the Divine Kingdom of God one pertains to the Materialistic universe and the other refers to Divine Spiritual world (Salvation) where the Dedicationists and Devotees of God enjoy the Divine nectar of God which they richly deserve by the immense Blessings of the Lord Supreme.

Kath Maharishi's beautiful depiction in the Kath Upanishad is as under:

द्वासुपर्णः सयुजासखाय समानं वृक्षं परिष्वजाते।।

Two birds having wonderful and sparkling feathers are sitting on a fruit tree. One (Atma) is enjoying the fruit and Lord God (spectator) is watching minutely the action of the Atma.

Now we come to the 2nd entity (Atma) for discussion:-

We should continue the practice of self introspection till the last breath of our life. Self-introspection is the only way which leads to the development of the soul. We have to reap the fruits of our good or bad actions as God ordains the dispensation of award and punishment according to our Karmas which cannot result in dissolution even after the expiry of crores of years. The virtuous actions are the fountain heads of Supreme bliss and give incentive to virtuous persons, whereas, the evil deeds bring hatred and dubiousness in its train. The only way possible is by means of meditation and introspection. We should sit every day, in a remote corner of the house and should remember our actions. while introspecting we should realise whether our life is being spent like animals or like a

holy person. This practice would elevate the soul.

The soul is eternal and ever lasting. The soul migrates from our body to the other. Arjuna was very much desirous to go to the battle field. When he reached there after being charioteered by Lord Krishna, he had a glance of the army arrayed in rank file and was considerably bewildered. To see them including Bhisham Pitamaha and Darona Acharya who were worthy of being worshipped. He frankly told Lord Krishna that he would not fight the battle as he was considerably demoralized. He totally lost the presence of mind.

Finding Arjuna in an extreme state of demoralization and discouragement Lord Krishna then delivered his sermon to him about the eternality of the soul. "Oh Arjuna who believes this soul to be the slayer and the other thinks that it dies, both are ignorant. This soul neither dies nor is slayed because the soul is birthless and deathless and is eternal and perpetual and unchangeable. It never perishes when the body is consigned to the flames in the cremation ground. The weapons cannot cut this soul, this fire cannot burn it, water cannot soak it and the air is unable to dry it. Spiritualism makes very active and put us into action and saves us from the jerks and jolts. The mortal body is subject to dissolution.

The third entity is prakrite (Matter)

Like the two entities, referred to above, prakrite (Matter) has not been challenged about its eternity by any philosopher or scientist.

According to Dr. Draper of U.S.A. There is no combination or destruction of Matter. Chemistry accepts without any hesitation, the law of imperishability of nature. It is motionless and immoveable.

Maharishi Dayanand ji Saraswati has fully explained in his Amargranth Satyarth Prakash that the Gun, Karma, Svabhav of the three entities remain unchanged for ever.

- D. D. Sharma

सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास पर एक दृष्टि

— सुरेश चन्द्र दीक्षित

स्वामी दयानन्द ऐसे महान् पुरुष हुए हैं जिन्होंने वेदों व उपनिषदों की परतों को खोलकर यह बताने का प्रयास किया कि पृथ्वी व अन्य नक्षत्र कैसे बने तथा पृथ्वी के अलावा अन्य नक्षत्रों में जीवन की संभावनाएँ हैं या नहीं। सत्यार्थ प्रकाश में उनके द्वारा लिखित अष्टम समुल्लास में इन बातों का सटीक उत्तर है। आज जब वैज्ञानिक अपनी नई खोजों के द्वारा अन्य नक्षत्रों जैसे चन्द्रमा व मंगल पर जीवन जानने के लिए भीषण प्रयास व बड़ी राशि द्वारा यंत्र बनाकर खोज करने में व्यस्त रहते हैं वहाँ स्वामी दयानन्द ने वैदिक वाङ्मय के माध्यम से यह बात बताने का प्रयास किया कि हमारे ऋषि तो इस ज्ञान से करोड़ों वर्ष पूर्व भी अन्य ग्रहों में जीव की उपस्थिति जानते थे।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति।

यत्प्रन्त्यमिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म॥ तैत्तिरीयोपनिषद्

इस मंत्र में यह बताया है कि ईश्वर ही विविध सृष्टि का धारण और प्रलयकर्ता है। परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारण रूप से कार्य रूप कर दिया। परमात्मा इस जगत् की उत्पत्ति के पूर्व भी विद्यमान था, वही इस भूत, भविष्यत् और वर्तमानस्थ जगत् को बनाने वाला है। अतः हमें उसकी भक्ति में तत्पर रहना चाहिए।

ईश्वर ने पृथ्वी से लेकर अखिल संसार को उत्पन्न किया है। वही रचना और प्रलय करता है। ईश्वर, जीव और जगत् अनादि है। इसमें से जीव इस वृक्ष रूपी संसार में पाप पुण्य रूप फलों को अच्छी तरह से भोगता है। परमात्मा कर्मों के फलों को नहीं भोगता है तथा सर्वत्र प्रकाशित हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप है। तीनों अनादि हैं। उपनिषद् में कहा है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति का कभी जन्म नहीं होता है। इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फंसता है। परमात्मा न उसका भोग करता है और न फंसता है। सत, रज, तम अर्थात् जड़ता तीन वस्तु मिलकर एक संघात है उसका नाम प्रकृति है।

स्वामी जी एक प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि प्रकृति में पहले बीज बना फिर वृक्ष एवं विस्तार हुआ। ईश्वर

निराकार है तथा भौतिक इन्द्रिय गोलक हस्त पादादि अवयवों से रहित है। परन्तु वह अपनी अनन्त शक्तियों से अनन्त काम करता है। शून्य आकाश, अदृश्य बिन्दु को भी कहते हैं। शून्य जड़ पदार्थ है। उस शून्य में सब जड़ पदार्थ अदृश्य रहते हैं। जैसे एक बिन्दु से रेखा, रेखाओं से गोला बनते हैं परन्तु शून्य को जानने वाला शून्य नहीं होता है। ईश्वर जीव को जैसा कर्म करता है वैसा ही फल देता है। बिना कर्ता के कोई भी क्रिया वा क्रियाजन्य पदार्थ नहीं बन सकता।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

ऋग्वेद में बताया है कि परमेश्वर ने पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्र, विद्युत्, पृथ्वी और अन्तरिक्ष आदि बनाये, वैसे आगे भी बनायेगा। अतः परमेश्वर कभी भूल चूक नहीं करता है। वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि बिना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहां ठहर सकते हैं? आकाश के बाद वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी,

उसने अनेक जीवों को उत्पन्न किया। सृष्टि में शरीर रचना युवावस्था में हुई। अगर बाल रूप में होती तो पालन कौन करता तथा वृद्धावस्था में मैथुनी सृष्टि नहीं होती। सृष्टि का प्रारम्भ तिब्बत से हुआ। आर्य लोग तिब्बत से आये। जो विद्वान् थे, आर्य कहलाए तथा दुष्ट राक्षस या अनार्य। जगत् की उत्पत्ति में एक अरब छियानवें करोड़ कई लाख वर्ष व कई सहस्र वर्ष लगे। जैसे अनन्त आकाश के सामने बड़े भूगोल समुद्र के आगे जलकरा तुल्य नहीं है वैसे परमेश्वर के आगे यह लोक परमाणु तुल्य भी नहीं है। पृथिव्यादिलोक घूमते हैं तथा सूर्य अपनी ऊर्जा, प्रकाश और तेज के साथ अपनी परिधि में धूमता है किन्तु किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। वैसे ही एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य प्रकाशक और दूसरे सब लोक लोकान्तर प्रकाशक हैं। जैसे चन्द्रलोक सूर्य से प्रकाशित होता है वैसे ही पृथ्वी भी सूर्य से प्रकाशित है। चन्द्रमा और पृथ्वी के घूमने से वह सूर्य के जो भाग सामने आता है उसमें रात—दिन, उदय—अस्त, मध्यान्ह होते हैं।

सृष्टि के भूलोकों में प्रजा रहती है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु है। अतः इनमें प्रजा रहती है। परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है। इसलिए सर्वत्र मनुष्य सृष्टि है। सब लोकों में मनुष्य सृष्टि के आकार में अन्तर मिलेगा जैसे भारतीय, अंग्रेज, जापानी, चीनी व अफ्रीकी। पेड़ पौधों व अन्य जीवों की बनावट में भी भिन्नता हो सकती है। परमेश्वर के अधीन जीव व जड़ पदार्थ हैं। जीव कर्म करने में स्वतंत्र परन्तु फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतंत्र है।

आधुनिक विज्ञान भी अन्य ग्रहों में जीवन, जल व वायु की जानकारी के लिए प्रयासरत है। चन्द्रमा व मंगल ग्रह पर वैज्ञानिक अभियान प्रयासरत हैं। स्वामी जी ने वर्षों पूर्व इस ज्ञान को वेदों के माध्यम से संसार के सामने रख दिया है। जिसका आठवें समुल्लास में विवेचन है। इतिशम्।

— रिटायर्ड प्रिंसिपल, द्वारा आनन्द एण्टरप्राइजेज, न्यूकोलोनी गुमान पुरा कोटा

काशी आर्य समाज, बुलानाला में पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि दी गई

श्री अटल बिहारी वाजपेयी वर्तमान युग के आदर्श राजनेता थे

काशी आर्य समाज बुलानाला में रविवार को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी को भावभीनी हार्दिक श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर आर्यजनों ने माननीय वाजपेयी जी को युगदृष्टा, आदर्श राजनेता बतलाया। वक्ताओं ने कहा कि वह अपने विद्यार्थी जीवन में आर्य कुमार सभा के मंत्री रहे, कानपुर में डी.ए.वी. कालेज में

उन्होंने शिक्षा ग्रहण की थी तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे, उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सन् 2000 ई. हुए, लखनऊ महाधिवेशन में प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित भी किया था।

उक्त श्रद्धांजलि सभा पं. ज्ञान प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण

शास्त्री, श्री मोती लाल आर्य, प्रेम चन्द्र आर्य, विवेक सिंह एडवोकेट, राजकुमार विश्वकर्मा, अशोक कुमार आर्य, रमेश जी आर्य आदि ने उपस्थित होकर अटल जी के जीवन कार्य पर विस्तार से प्रकाश डाला, अन्त में शांतिपाठ किया गया।

— प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री, आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी—221001

प्रवेश प्रारम्भ

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान में अष्टाध्यायी अनुक्रम से संस्कृत व्याकरण, दर्शन एवं अन्य ऋषिकृत ग्रन्थों की कक्षाएँ प्रारम्भ हो रही हैं। अध्ययन आर्ष पाठविधि से कराया जायेगा। विद्यार्थियों के आवास एवं भोजनादि का सम्पूर्ण व्यय सभा की ओर से किया जायेगा। गुरुकुल सम्बन्धी सभी नियमों एवं दिनचर्या आदि का पालन अनिवार्य होगा। विद्यार्थी की आयु न्यूनतम 16 वर्ष हो। इच्छुक छात्र निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें।

—आचार्य, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर—305001 (राज.)

दूरभाष :- 0145—2460164

ईमेल :- psabhaha@gmail.com

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा “सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा” के नाम से सभा कार्यालय “महर्षि दयानन्द भवन” 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

—व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

आर्य समाज श्रृंगारनगर में ईसाई युवती का शुद्धि संस्कार

दिनांक 15 अगस्त, 2018 को आर्य समाज श्रृंगारनगर, लखनऊ में एक 32 वर्षीया ईसाई युवती केरन रैस्कर का शुद्धि संस्कार करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और नया नाम ‘कृति’ रखा गया।

— मंत्री, आर्य समाज श्रृंगारनगर, लखनऊ

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

**सोशल मीडिया के
माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी**



आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रसिद्ध इतिहासकार प्रमाणिक लेखक, प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. भवानीलाल भारतीय का निधन

आर्य जगत् के उच्च कोटि के वयोवृद्ध विद्वान् प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. भवानी लाल भारतीय जी का दिनांक 11 सितम्बर, 2018 को रात्रि में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 12 सितम्बर, 2018 को सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

डॉ. भारतीय जी आर्य जगत् के चमकते हुए नक्षत्र थे। उन्होंने ईश्वर, वेद, ऋषि दयानन्द, आर्य समाज सहित अनेकों महत्त्वपूर्ण विषयों पर उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना की। आर्य जगत् की प्रत्येक पत्रिका में उनके विद्वत्पूर्ण लेख प्रकाशित होते थे। उनकी लेखनी से सैकड़ों लोगों ने प्रेरणा प्राप्त की। डॉ. भारतीय जी ने जो विस्तृत साहित्य लिखा है उसका प्रकाशन होना चाहिए जिससे आमजन उससे लाभ उठा सकें। डॉ. भवानीलाल भारतीय के निधन से आर्य समाज की



अपूर्ण क्षति हुई है जिसकी पूर्ति करना आसान नहीं है।

डॉ. भवानी लाल भारतीय जी के निधन पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि पुरानी पीढ़ी का एक विद्वत् नक्षत्र आज विलीन हो गया। उनके निधन से एक युग का समापन हुआ है। सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारियों तथा सम्पूर्ण आर्य जगत् की तरफ से श्री भवानी लाल भारतीय जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

— सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम अधिवेशन

दिनांक 30 सितम्बर, 2018 प्रातः 9 बजे से

स्थान : श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

देश के समस्त गुरुकुलों के समादरणीय आचार्यों एवं आचार्याओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार के अवसर पर 'श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्' का गठन किया गया था। परिषद् का प्रथम अधिवेशन 30 सितम्बर, 2018 (रविवार) को श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद में प्रातः 9 बजे से प्रारम्भ होगा। इस सम्बन्ध में प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी (हैदराबाद) ने सूचित किया है कि गुरुकुलों के आचार्या एवं आचार्यों के आने-जाने का थर्ड ए.सी. रेल का मार्ग व्यय, आवास, भोजन एवं उचित सम्मान दिया जायेगा। गुरुकुलों की एकरूपता के लिए यह एक आवश्यक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। हमें इसमें गुरुकुलों में सैद्धान्तिक शिक्षण के पाठ्यक्रम की एकरूपता के लिए विशेष विचार-विमर्श करना है। गुरुकुल में आने वाली समस्याओं का समाधान, छात्र एवं छात्राओं की प्रतियोगिताएँ, संस्कृत भाषण आदि विविध विषयों पर चर्चा के लिए हम सभी को एकत्रित होना है। समय की न्यूनता को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त विषयक अपने विचार एवं सुझाव श्रीमद्दयानन्द वैदिक परिषद् कार्यालय 119, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-49 के पते पर भेजने का कष्ट करें। (यदि सम्भव हो तो एक प्रति

ई-मेल द्वारा — gurukulparishad@gmail.com पर प्रेषित करें।) जिससे इन विषयों पर गम्भीर चिन्तन किया जा सके।

वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार तथा वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा हमारा मुख्य उद्देश्य एवं कर्तव्य है। आप 29 सितम्बर, 2018 को सायं अथवा 30 सितम्बर, 2018 को प्रातः 8 बजे तक श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद पहुँचने का कष्ट करें। जिससे संगोष्ठी के समय प्रातः 9 बजे आप उपस्थित रह सकें। आप अपने आने-जाने का आरक्षण कराकर ई-मेल द्वारा परिषद् कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करें तथा टिकट की छायाप्रति साथ में अवश्य लावें जिससे आयोजकों को व्यय विवरण बनाने में सुविधा रहेगी। (प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी का मोबाइल नं.-9849560691 है। आवश्यकता पड़ने पर आपसे सम्पर्क करें।)

सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

— स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि — स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन — पृष्ठ 232 — मूल्य 100 रुपये
 2. वैशेषिक दर्शन — पृष्ठ 248 — मूल्य 100 रुपये
 3. न्याय दर्शनम् — पृष्ठ 240 — मूल्य 100 रुपये
 4. सांख्य दर्शन — पृष्ठ 156 — मूल्य 80 रुपये
 5. संस्कार विधि — पृष्ठ 278 — मूल्य 90 रुपये
- बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

चारो वेदों का सेट

भारी छूट पर उपलब्ध
लागत मूल्य 4100 / - रुपये

25 प्रतिशत छूट पर दिया जायेगा

डाक से मंगाने पर एक वेद सैट का

डाक व्यय 200 / - रुपये

अतिरिक्त देना होगा।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।